تفسير معاني

القرآن الكريم

باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويارك بأمريكا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقًا)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقًا)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقًا)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman

ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the publisher.

3rd Edition: August 2011

Supervised by:

Abdul Malik Mujahid

HEAD OFFICE

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A.Tel: 00966-1-4033962/4043432 Fax: 4021659

E-mail: darussalam@awalnet.net.sa, riyadh@dar-us-salam.com Website:www.darussalamksa.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:
Riyadh
Olaya branch: Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945
Malaz branch: Tel 00966-1-4735220 Fax: 4735221
Suwaydi branch: Tel: 00966 1 4286641
Suwailam branch: Tel & Fax-1-2860422

- **Jeddah**
  Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- **Madinah**
  Tel: 00966-04-8234446, 8230038
  Fax: 04-8151121
- **Al-Khobar**
  Tel: 00966-3-8692900 Fax: 8691551
- **Khamis Mushayt**
  Tel & Fax: 00966-072207055
- **Yanbu Al-Bahr** Tel: 0500887341 Fax: 04-3908027
- **Al-Buraida** Tel: 0503417156 Fax: 06-3696124

U.A.E
- **Darussalam, Sharjah U.A.E**
  Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624
  Sharjah@dar-us-salam.com.

PAKISTAN
- **Darussalam,** 36 B Lower Mall, Lahore
  Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- **Rahman Market, Ghazni Street,** Urdu Bazar Lahore
  Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703
- **Karachi,** Tel: 0092-21-4393936 Fax: 4393937
- **Islamabad,** Tel: 0092-51-2500237 Fax: 512281513

U.S.A
- **Darussalam, Houston**
  P.O Box: 79194 Tx 77279
  Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
  E-mail: houston @dar-us-salam.com
- **Darussalam, New York** 486 Atlantic Ave, Brooklyn
  New York-11217, Tel: 001-718-625 5925
  Fax: 718-625 1511
  E-mail: darussalamny@hotmail.com

U.K
- **Darussalam International Publications Ltd.**
  Leyton Business Centre
  Unit-17, Etloe Road, Leyton, London, E10 7BT
  Tel: 0044 20 8539 4885 Fax:0044 20 8539 4889
  Website: www.darussalam.com
  Email: info@darussalam.com
- **Darussalam International Publications Limited**
  Regents Park Mosque, 146 Park Road
  London NW8 7RG Tel: 0044- 207 725 2246
  Fax: 0044 20 8539 4889

AUSTRALIA
- **Darussalam:** 149 Haldon St, Lakemba (Sydney)
  NSW 2195, Australia
  Tel: 0061-2-97407188 Fax: 0061-2-97407199
  Mobile: 0061-414580813 Res: 0061-2-97580190
  Email: abumuaaz@hotamail.com
- **The Islamic Bookstore**
  Ground Floor-165 Haldon Street
  Lakemba, NSW 2195, Australia
  Tel: 0061-2-97584040 Fax: 0061-2-97584030
  Email: info@islamicbookstore.com.au
  Web Site: www.islamicbookstore.com.au

CANADA
- **Nasiruddin Al-Khattab**
  2-3415 Dixie Rd, Unit # 505
  Mississauga, Ontario L4Y 4J6, Canada
  Tel: 001-416-418 6619

FRANCE
- **Editions & Librairie Essalam**
  135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris
  Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83
  Fax: 0033-01-43 57 44 31
  E-mail: essalam@essalam com.

MALAYSIA
- **Darussalam**
  Int'l Publishing & Distribution SDN BHD
  D-2-12, Setiawangsa 11, Taman Setiawangsa
  54200 Kuala Lumpur
  Tel: 03-42528200 Fax: 03-42529200
  Email: darussalam@streamyx.com
  Website: www.darussalam.com.my

SRI LANKA
- Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4
  Tel: 0094 115 358712 Fax: 115-358713

INDIA
- **Islamic Books International**
  54, Tandel Street (North)
  Dongri, Mumbai 4000 09, INDIA
  Tel: 0091-22-2373 4180
  E-mail: ibi@irf.net
- **Darussalam, India**
  31/5, Musvee plaza, Triplicane high road
  Tripline, Chennai-600 005, Tamil nadu, Indian
  Telefax: +91 44 45566249
  Email: info@darussalam.in
  Website: www.darussalam.in

SOUTH AFRICA
- **Islamic Da'wah Movement (IDM)**
  48009 Qualbert 4078 Durban,South Africa
  Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
  E-mail: idm@ion.co.za

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

আরবী ও ইসলামিক স্টাডিজ বিভাগ

রাজশাহী বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলাদেশ

সদস্য, বাংলাদেশ জমঈয়তে আহলে হাদীস

প্রাক্তন পরিচালক, ইসলামিক এডুকেশন সেন্টার

ইস্ট মিডো, নিউ ইয়র্ক-১১৫৫৪, যুক্তরাষ্ট্র

সম্পাদনায়ঃ

প্রফেসর ড. আব্দুল্লাহ ফারুক সালাফি

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

ডিপার্টমেন্ট অব দা'ওয়া এন্ড ইসলামীক স্টাডিজ

ইন্টারন্যাশনাল ইসলামীক ইউনিভার্সিটি

চিটাগং, বাংলাদেশ।

দা রু স সা লা ম

রিয়াদ • জেদ্দা • আল-খোবার • শারজাহ্

লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রথম প্রকাশ

নভেম্বরঃ ২০০১ ইংরেজী

রামাযানঃ ১৪২২ হিজরী

অগ্রহায়ণঃ ১৪০৮ বাংলা

তৃতীয় সংস্করণ

জানুয়ারীঃ ২০০৭ ইংরেজী

জিলহজ্জঃ ১৪২৭ হিজরী

পৌষঃ ১৪১৩ বাংলা

গ্রন্থস্বত্বঃ প্রকাশকের

সদর দফতর

পোঃ বক্সঃ ২২৭৪৩, রিয়াদঃ ১১৪১৬, সৌদি আরব ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪০৩৩৯৬২-৪০৪৩৪৩২

ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-১-৪০২১৬৫৯

E-mail: Darussalam@awalnet.net.sa Website: http: // www. dar-us-salam.com

শা খা স মূ হ ঃ

বিক্রয় কেন্দ্রসমূহ

রিয়াদ, সৌদি আরব

উলাইয়াঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৬১৪৪৮৩ ফ্যাক্সঃ ৪৬৪৪৯৪৫

মালাযঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৭৩৫২২০ ফ্যাক্সঃ ৪৭৩৫২২১

সুলাইমঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-২৮৬০৪২২

জেদ্দাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-২-৬৮৭৯২৫৪ ফ্যাক্সঃ ৬৩৩৬২৭০

মদীনাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৫০৩৪১৭১৫৫ ফ্যাক্সঃ ০৪-৮১৫১১২১

আল-খোবারঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৩-৮৬৯২৯০০ ফ্যাক্সঃ ৮৬৯১৫৫১

খামীস মুশীতঃ ফোন+ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-০৭২২০৭০৫৫

আরব আমীরাত

ফোনঃ ০০৯৭১-৬-৫৬৩২৬২৩ ফ্যাক্সঃ ৫৬৩২৬২৪

E-mail: Sharjah @dar-us-salam.com

পাকিস্তান

দারুসসালাম, ৩৬/বি লয়ার মল, লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭২৪ ০০২৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩৫৪০৭২

রহমান মার্কেট, গজনী স্ট্রীট, উর্দুবাজার লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭১২০০৫৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩২০৭০৩

কারাচী ফোনঃ ০০৯২-২১-৪৩৯৩৯৩৬ ফ্যাক্সঃ ৪৩৯৩৯৩৭

ইসলামাবাদ ফোনঃ ০০৯২-৫১-২৫০০২৩৭

যুক্তরাষ্ট্র

দারুসসালাম, হিউস্টন

পি.ও. বক্সঃ ৭৯১৯৪ টিএক্স ৭৭২৭৯

ফোনঃ ০০১-৭১৩-৭২২০৪১৯ ফ্যাক্সঃ ৭২২০৪৩১

E-mail: sales@dar-us-salam.com

দারুসসালাম, নিউ ইয়র্ক

৪৮৬ আটলান্টিক এভিনিউ, ব্রুকলীন

নিউইয়র্ক ১১২১৭, ফোন ঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ৫৯২৫

ফ্যাক্সঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ১৫১১

E-mail: darussalamny@hotmail.com

যুক্তরাজ্য

লন্ডনঃ দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

লিওটন বিজনেস সেন্টার

ইউনিট-১৭, ইটলো রোড, লিওটন, লন্ডন, ই১০ ৭ বিটি

ফোনঃ ০০৪৪ ২০ ৮৫৩৯ ৪৮৮৫ ফ্যাক্সঃ ৮৫৩৯ ৪৮৮৯

Website: www.darussalam.com

E-mail: info@darussalam.com

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

রিজেন্ট পার্ক মসজিদ, ১৪৬ পার্ক রোড,

লন্ডন এনডব্লিউ ৮ ৭ আর জি

ফোনঃ ০০৪৪-২০৭ ৭২৫ ২২৪৬

কানাডা

ইসলামীক বুকস সার্ভিস

২২০০ সাউথ শেরীডান ওয়ায়ে মিসিসাওগা

ওয়ানটারিও কানাডা এল৫কে ২সি৮

ফোনঃ ০০১-৯০৫-৪০৩৮৪০৬ এক্সিট.২১৮

ফ্যাক্সঃ ৯০৫-৮৪০৯

মালয়েশিয়া

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

১০৯/এ, জালান এসএস২১/১এ, ডামানসারা উটামা

৪৭৪০০, পিটালিন জায়া, সিলাঙ্গুর, দারুল ইহসান

মালয়েশিয়া, ফোনঃ ০০৬০৩-৭৭১০ ৯৭৫০

ফ্যাক্সঃ ৭৭১০০৭৪৯

E-mail: Darussalam@streamyx.com

ফ্রান্স

ইসলাম লাইব্রেরী

১৩৫, বিডি ডি মেনিলমোনটেন্ট-৭৫০১১ প্যারিস

ফোনঃ ০০৩৩-০১-৪৩ ৩৮ ১৯ ৫৬/ ৪৪ ৮৩

ফ্যাক্সঃ ০০৩৩-০১- ৪৩ ৫৭ ৪৪ ৩১

E-mail: essalam@esslam.com

সূচীপত্র

১. সূরা ফাতিহা 01
২. সূরা বাকারা.....04
৩. সূরা আল-ইমরান 91
৪. সূরা আন-নিসা 143
৫. সূরা মায়িদা 190
৬. সূরা আন'আম 232
৭. সূরা 'আরাফ 281
৮. সূরা আনফাল.....333
৯. সূরা তাওবা 352
১০. সূরা ইউনুস 391
১১. সূরা হূদ 416
১২. সূরা ইউসুফ.....445
১৩. সূরা রা'দ.....469
১৪. সূরা ইবরাহীম 479
১৫. সূরা হিজর.....493
১৬. সূরা নাহল.....504
১৭. সূরা বানী ইসরাইল 529
১৮. সূরা কাহ্‌ফ.....549
১৯. সূরা মারইয়াম 573
২০. সূরা ত্বা-হা 587
২১. সূরা আম্বিয়া.....607
২২. সূরা হাজ্জ 623
২৩. সূরা মু'মিনুন.....639
২৪. সূরা নূর.....652
২৫. সূরা ফুরকান.....668
২৬. সূরা শুআ'রা.....680
২৭. সূরা নাম্‌ল.....700
২৮. সূরা কাসাস্‌ 715
২৯. সূরা আনকাবূত 734
৩০. সূরা রূম 747
৩১. সূরা লোকমান 756
৩২. সূরা সাজ্‌দাহ.....763
৩৩. সূরা আহ্‌যাব.....768
৩৪. সূরা সাবা.....785
৩৫. সূরা ফাতির 795
৩৬. সূরা ইয়াসীন 803
৩৭. সূরা সাফ্‌ফাত.....814
৩৮. সূরা সোয়াদ.....829
৩৯. সূরা যুমার 839
৪০. সূরা মু'মিন 852
৪১. সূরা হা-মীম আস্‌সাজদাহ .867
৪২. সূরা শূরা.....878
৪৩. সূরা যুখরুফ.....888
৪৪. সূরা দুখান.....900
৪৫. সূরা জাসিয়া.....905
৪৬. সূরা আহক্বাফ.....912
৪৭. সূরা মুহাম্মাদ.....920
৪৮. সূরা ফাত্‌হ.....928
৪৯. সূরা হুজুরাত 935
৫০. সূরা ক্বা'ফ 939
৫১. সূরা যারিয়াত 944
৫২. সূরা তূর 951
৫৩. সূরা নাজম.....955
৫৪. সূরা কামার.....962
৫৫. সূরা রহমান 968
৫৬. সূরা ওয়াকি'আহ্‌.....974

Department of Da'wah & Islamic Studies

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ

International Islamic University Chittagong

Ref :

Date : 13-12-2005

إلى من يهمه الأمر

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، وبعد!

فإن الأستاذ الدكتور محمد مجيب الرحمن أستاذ ورئيس القسم العربي والدراسات الإسلامية بجامعة راجشاهي وعضو جمعية أهل الحديث ، بنغلاديش ومدير قسم التعليم الإسلامي العالي بميدو الشرقية بالولايات المتحدة الأمريكية أحد الدعاة الجهابذة وقادة الفكر الإسلامي في أرجاء بنغلاديش وله شهرة واسعة في الأوساط العلمية وهو من المجيدين المتقنين لشتى اللغات وهو كذلك صاحب خبرة طويلة وتجارب ممحصة في مجال العلوم الشرعية وإنه قام بترجمة معاني القرآن الكريم باللغة البنغالية المسمى –القرآن الكريم بنغلا تفسير– ترجمة صحيحة وافية حيث إنها تنقل إلى القراء الكرام روح القرآن وأهدافه النبيلة وتعاليمه السمحة بأسلوب رصين وذلك خلال فترة عمله ومحاضراته في جامعة راجشاهي الحكومية ببنغلاديش ثم خلال فترة عمله في المركز الثقافي الإسلامي بمدينة نيو يورك،الولايات المتحدة الأمريكية وإنني أرى أن الترجمة المذكورة تستحق الطبع والنشر في داخل البلاد وخارجها ليستفيد بها المسلمون الناطقون باللغة البنغالية وإنهم في أمس الحاجة إلى مثل هذه الترجمة التي وفت بالغرض شرعيا ولغويا وأدبيا وبلاغيا وقد قدم صاحبها خدمة جليلة في حقل تفسير القرآن الكريم باللغة البنغالية كما أن المذكور يتحلى بالأخلاق الفاضلة والسير الحميدة ويتمسك بالعقيدة السالمة من شوائب الشرك والبدعة. والله ولي التوفيق وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين .

كتبه

(د. عبد الله فاروق السلفي)

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش.

Head
Dept. of Da'wah & Islamic Studies
International Islamic University Chittagong

Main Campus: 154/A, College Road, Chittagong-4203, Bangladesh.Tel: 880-031-610085, 610308, 625230, 638656 - 7, 639981, Ext.: 210, Fax: 880-031-610307, E-mail : info@iiuc.ac.bd **Permanent Campus:** Kumira, Sitakunda, Chittagong. Phone- 018329139, Web Site: www.iiuc.ac.bd **Dhaka Campus:** House no. 23, Road no. 03, Dhanmondi R/A, Dhaka-1205, Bangladesh. Phone- 880-2-8629947, 8613294, 8620115, Fax: 880-2-8624692, E-mail : iucdhk@bdonline.com

প্রকাশকের নিবেদন

সমস্ত প্রশংসা নিবেদন করছি বিশ্বজগতের রব, আল্লাহর জন্য যিনি আল-কুরআন অবতীর্ণ করেছেন মানব জাতির হেদায়েত ও কল্যাণের নিমিত্তে। দরূদ ও সালাম মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি এবং তাঁর পরিবার ও সাহাবীদের উপর বর্ষিত হোক।

বিশ্বে এখন প্রায় পঁয়ত্রিশ/চল্লিশ কোটি বাংলাভাষী রয়েছে। তাদের বেশিরভাগই হলেন মুসলমান। তারা দেশে-বিদেশে নিজ ভাষায় আল-কুরআন অধ্যয়ন করতে আগ্রহী। কিয়ামত পর্যন্ত আল-কুরআন মানবতার মুক্তির দিশারী এতে কোন সন্দেহ নেই। দুনিয়ার শান্তি ও আখেরাতের মুক্তির জন্য-এর অধ্যয়ন, চর্চা ও বাস্তবায়ন অবশ্যম্ভাবী।

উল্লেখ্য যে, আল-কুরআনের অনুবাদ গ্রন্থের মর্যাদা (মূল) কুরআনের সমপর্যায়ভুক্ত নয়। তবুও অনুবাদ মানুষকে স্ব-ভাষায় কুরআনের ভাবার্থ বুঝতে ও তার দ্বারা উপকৃত হতে এবং দুনিয়া ও আখেরাতের জীবনকে সমৃদ্ধশালী করতে সাহায্য করে।

এ তরজমা দারুস্‌সালামের দীর্ঘদিনের আশা-আকাঙ্ক্ষার বাস্তবায়ন। এ মহৎ কাজে বাংলাদেশের বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান তাঁর অনূদিত তাফসীর ইবনে কাসীর-এর কুরআনের তরজমা অংশটি দিয়ে আমাদের সে ইচ্ছা পূর্ণ করেছেন।

বাংলাভাষায় কুরআনুল কারীমের এই নির্ভরযোগ্য তরজমা বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকাদের হাতে তুলে দিতে পারায় আমি সর্বপ্রথমে আল্লাহ রাব্বুল আলামীনের শুকরিয়া আদায় করছি।

প্রকাশনা পরিষদের অক্লান্ত পরিশ্রমের ফলে সংশোধিতরূপে সত্ত্বর-এর প্রকাশনা সম্ভব হয়েছে। ড. আব্দুল্লাহ ফারূক, মুহাম্মাদ আব্দুর রব আফফান, আজমল হুসাইন, সাইফুল ইসলাম ও জনাব মুহিববুর রহমান, বর্ণবিন্যাসকারী ও ডিজাইনার জনাব আসাদুল্লাহসহ যাঁরা এ অনুবাদ প্রকাশনায় সক্রিয়ভাবে সহযোগিতা করেছেন তাদের সকলের প্রতি রইল আমার আন্তরিক কৃতজ্ঞতা ও শুভেচ্ছা।

হাদীসের সাহায্য ছাড়া কুরআনের অর্থ অনুধাবন করা যায় না। তাই প্রয়োজনীয় ক্ষেত্রে সহীহ হাদীসের অনুবাদের মাধ্যমে টীকা সংযোজন করা হয়েছে। তবে হাদীস অনুবাদের ক্ষেত্রে মূল আরবী গ্রন্থ দেখে করা হয়েছে। অধিকাংশ হাদীসই সহীহ আল-বুখারী থেকে নেয়া হয়েছে।

বাংলাভাষী সকল পর্যায়ের মুসলমান ভাইদের পবিত্র কুরআনের অর্থ বুঝে পড়ার আগ্রহের প্রতি লক্ষ্য রেখে তরজমা সহজ, বোধগম্য ও প্রাঞ্জল করার চেষ্টা করা

৫৭. সূরা হাদীদ 981
৫৮. সূরা মুজাদালাহ্.....988
৫৯. সূরা হাশ্‌র.....993
৬০. সূরা মুমতাহিনাহ্ 1000
৬১. সূরা সাফ্‌ফ.....1004
৬২. সূরা জুমুআ'হ্.....1007
৬৩. সূরা মুনাফিকূন 1009
৬৪. সূরা তাগাবুন.....1012
৬৫. সূরা তালাক.....1015
৬৬. সূরা তাহ্‌রীম.....1019
৬৭. সূরা মুল্‌ক.....1023
৬৮. সূরা কলম.....1027
৬৯. সূরা হাক্‌কাহ্ 1032
৭০. সূরা মা'আরিজ 1037
৭১. সূরা নূহ্.....1040
৭২. সূরা জ্বীন 1044
৭৩. সূরা মুয্‌যাম্মিল.....1047
৭৪. সূরা মুদ্‌দাস্‌সির.....1050
৭৫. সূরা কিয়ামাহ্.....1055
৭৬. সূরা দাহ্‌র.....1058
৭৭. সূরা মুরসালাত 1061
৭৮. সূরা নাবা.....1066
৭৯. সূরা নাযি'আত.....1069
৮০. সূরা আ'বাসা.....1072
৮১. সূরা তাক্‌ভীর 1075
৮২. সূরা ইন্‌ফিতার.....1078
৮৩. সূরা মুতাফ্‌ফিফীন.....1080
৮৪. সূরা ইন্‌শিকাক 1083
৮৫. সূরা বুরূজ.....1085
৮৬. সূরা তা'-রিক.....1086
৮৭. সূরা আ'লা 1088
৮৮. সূরা গাশিয়াহ্ 1089
৮৯. সূরা ফাজ্‌র 1091
৯০. সূরা বালাদ 1094
৯১. সূরা শামস.....1096
৯২. সূরা লাইল.....1097
৯৩. সূরা দুহা.....1099
৯৪. সূরা আলাম নাশরাহ্ ...1100
৯৫. সূরা তীন 1100
৯৬. সূরা আ'লাক 1101
৯৭. সূরা কাদ্‌র.....1103
৯৮. সূরা বাইয়্যিনাহ্.....1103
৯৯. সূরা যিলযাল 1104
১০০. সূরা আদিয়াত.....1105
১০১. সূরা কা'রি'আহ্.....1106
১০২. সূরা তাকাসুর 1107
১০৩. সূরা আসর 1108
১০৪. সূরা হুমাযাহ্.....1108
১০৫. সূরা ফীল 1109
১০৬. সূরা কুরাইশ.....1109
১০৭. সূরা মাউন.....1110
১০৮. সূরা কাওসার.....1111
১০৯. সূরা কা'ফিরূন 1111
১১০. সূরা নাস্‌র 1112
১১১. সূরা লাহাব্ 1112
১১২. সূরা ইখলাস.....1113
১১৩. সূরা ফালাক 1114
১১৪. সূরা নাস.....1115

অনুবাদকের আরয

মানবকুলের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ তারাই যারা পবিত্র কুরআনের শিক্ষা গ্রহণ ও শিক্ষা দানে নিয়োজিত। নবী আকরামের (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই পবিত্র বাণী সকল যুগের জ্ঞান-তাপস ও মনীষীদের উদ্বুদ্ধ করেছে পাক কুরআনের অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রণয়ন করার কাজে।

আল্লাহ পাকের লাখো শুকরিয়া, 'তাফসীর ইবনে কাসীরের' ব্যাপক জনপ্রিয়তা, কল্যাণকারিতা এবং অপরিসীম গুরুত্বের কথা অনুধাবন করে তা বাংলায় ভাষান্তরিত করে প্রায় বিশ বছর আগে বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকার হাতে অর্পণ করতে সক্ষম হয়েছিলাম।

আন্তর্জাতিক খ্যাতি সম্পন্ন প্রকাশনা প্রতিষ্ঠান 'দারুসসালাম' সেই তাফসীর থেকে কুরআনের 'তরজমা অংশটুকু' প্রকাশের উদ্যোগ নেয় ২০০১ সালে। এবার তারা পুনঃপ্রকাশের উদ্যোগ নিয়েছে এর জনপ্রিয়তার কারণে। ভবিষ্যতে 'পূর্ণাঙ্গ তাফসীর' প্রকাশের পরিকল্পনা তাদের রয়েছে। আল্লাহ তা'আলা তাদের কামিয়াব করুন এবং উপযুক্ত যা'জা দান করুন।

আপ্রাণ চেষ্টা সত্ত্বেও একান্ত অনিচ্ছাকৃতভাবে এতে কিছু মুদ্রণ প্রমাদ, তরজমার উপস্থাপনা এবং অন্যান্য ত্রুটি-বিচ্যুতি পরিলক্ষিত হয়েছিল। যেসব বিষয়ে সুধী পাঠক মহলের পক্ষ থেকে অনুবাদকের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হয়েছে, (মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন)। সেগুলো পরম কৃতজ্ঞতা ও ধন্যবাদসহ গৃহীত হয়েছে। এই কল্যাণময় কাজটিকে আরো উন্নতমানের এবং একান্ত রুচিশীলভাবে সম্পন্ন করে পরিমার্জিত আকারে প্রকাশ করা হয়েছে।

এই তরজমা যদি চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকার মনের কোণে রূহানী আনন্দ দিয়ে কুরআনের মহাশিক্ষাকে তাদের দৈনন্দিন জীবনের প্রতিটি পর্যায়ে পূর্ণাঙ্গ রূপলাভের সংকল্প জাগিয়ে তুলতে পারে, আর এর আলোকেই যদি তারা গড়ে তুলতে পারেন তাদের জীবনধারা, তবেই পরিশ্রম ও সাধনাকে আমি সফল ও সার্থক মনে করবো।

আটলান্টিক, নিউজার্সি, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র

বিনয়াবনত

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

হয়েছে, যাতে তেলাওয়াতের সাথে সাথে তাঁরা কুরআন মাজিদের অর্থও বুঝতে পারেন।

২০০১ সালে প্রকাশিত তরজমায় যেসব ত্রুটি-বিচ্যুতির ব্যাপারে চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকা ও গবেষকমণ্ডলী পরামর্শ দিয়েছেন তাঁদেরকে আন্তরিক ধন্যবাদ জানাচ্ছি, মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন। এবারের প্রকাশনায় ঐ সব ত্রুটি সংশোধনের যথাসাধ্য চেষ্টা করা হয়েছে।

মানুষ ভুলের উর্ধ্বে নয়, সে হিসেবে এই অনুবাদেও ভুল-ভ্রান্তি থাকতে পারে। সুবিজ্ঞ পাঠক-পাঠিকার নিকট অনুরোধ অনুবাদে অনিচ্ছাকৃতভাবে কোনরূপ ভুল ধরা পড়লে দারুস্‌সালাম দফতরে মেহেরবানী করে জানাবেন। ইনশাআল্লাহ ভুলের সংশোধন আগামী সংস্করণে অবশ্যই করা হবে।

পবিত্র আল-কুরআনের বাংলা এ তরজমা গ্রন্থটি দ্বারা ইসলামকে জানার ব্যাপারে বাংলাভাষী জনগণ উপকৃত হলে আমাদের শ্রমও সার্থক হবে। পাঠকদের নিকট এটি গৃহীত হবে বলে আশা করছি। আল্লাহ আমাদের উত্তম আমলগুলো কবূল করুন এবং ভুল-ত্রুটিগুলো ক্ষমা করুন। আমীন।

রিয়াদঃ জানুয়ারী, ২০০৭

আব্দুল মালিক মুজাহিদ

জেনারেল ম্যানেজার

সূরাঃ ফাতিহা[১] মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকূঃ ১)

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ، رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি জগতসমূহের প্রতিপালক।[২]

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয় দয়ালু।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য প্রার্থনা করি।

১। "ফাতিহা" (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুস্হাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর দ্বারাই কির'আত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ।)

২। আবূ সাঈদ ইবনুল মু'আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহ্র রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ "আল্লাহ্ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আল্লাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহ্বানে সাড়া দাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।" (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)
তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বের দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি যে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে 'সাবউল মাসানী' বা বার বার পঠিত এ সাতটি আয়াত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে "সাবউল মাসানী" বলা হয় এ জন্য যে সূরাটিতে মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

সহায়ক গ্রন্থ

১। "মিসবাহুল মুনীর" (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
২। তাফসীরে জালালাইন
৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।

সূরাঃ ফাতিহা[১] মাক্কী

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৭ রুকূঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٧، رُكُوْعُهَا ١

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি জগতসমূহের প্রতিপালক।[২]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয় দয়ালু।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য প্রার্থনা করি।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤

১। "ফাতিহা" (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুসহাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর দ্বারাই কির'আত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ।)

২। আবূ সাঈদ ইবনুল মু'আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ "আল্লাহ্ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আল্লাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহবানে সাড়া দাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।" (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)
তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বের দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি যে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে 'সাবউল মাসানী' বা বার বার পঠিত এ সাতটি আয়াত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে "সাবউল মাসানী" বলা হয় এ জন্য যে সূরাটিতে মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

সহায়ক গ্রন্থ

১। "মিসবাহুল মুনীর" (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
২। তাফসীরে জালালাইন
৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿٦﴾

৬. আমাদেরকে সরল সঠিক পথ-প্রদর্শন করুন।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

৭. তাদের পথ, যাদের প্রতি আপনি অনুগ্রহ করেছেন; তাদের নয় যাদের প্রতি আপনার গযব বর্ষিত হয়েছে[১] এবং তাদেরও নয় যারা পথভ্রষ্ট।[২-৩-৪]

১। আ'দি বিন হাতেম (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেনঃ (مغضوب عليهم) দ্বারা ইয়াহূদী সম্প্রদায়কে বুঝানো হয়েছে। (যারা সত্যকে জেনে শুনেও তা থেকে দূরে সরে গেছে এবং ইচ্ছাকৃতভাবে আমল পরিত্যাগ করেছে।) আর (ضالين) দ্বারা নাসারা বা খ্রিস্টানগণকে বুঝানো হয়েছে। (যাদের সঠিক পথ সম্পর্কে কোন ধারণা ও জ্ঞান নেই।) (তিরমিযী)

২-৩-৪। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তরখান বিছানো হলো। তিনি তা থেকে খেতে অস্বীকার করলেন (এবং যায়েদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর যায়েদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ করা হয়। যায়েদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহর নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ত্রুটির প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরীকে সৃষ্টি করলেন আল্লাহ্ এবং তিনিই তাঁর আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছুর পরও তোমরা তাকে গাইরুল্লাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহূদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহূদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহ্‌র আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। যায়েদ বললেন আমি তো আল্লাহ্‌র আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ্ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখিনা। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহূদী আলেম বললেনঃ দ্বীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। যায়েদ বললেনঃ দ্বীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তাহল ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি (ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) ইয়াহূদী কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। অতঃপর যায়েদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহ্‌র লা'নতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। যায়েদ বললেন আল্লাহ্‌র লা'নত থেকে (মুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহ্‌র লা'নত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমকেও বললেনঃ তা'হলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন দ্বীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম

বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (দ্বীনে) হানীফ ব্যতীত। যায়েদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি ইয়াহূদী ও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। যায়েদ যখন দেখলেন যে ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ্! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের প্রতি রয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৮)

* লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাত দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহ্‌র কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের অনুসারী নয়। আর তিনি জীবন্ত প্রোথিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

* উবাদা বিন সামিত (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি নামাযে সূরা ফাতিহা পাঠ করবে না তার নামাযই হবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬)

* আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহ আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন ইমাম সাহেব আমীন বলে তখন তোমরাও আমীন বল। কেননা (ঐ সময়) ফেরেশ্‌তারাও আমীন বলে থাকে। যে ব্যক্তির আমীন বলা ফেরেশ্‌তাদের আমীন বলার সাথে মিলে যায় তার পূর্ববর্তী গোনাহ মাফ করে দেয়া হয়। (আমীন অর্থ হচ্ছে "হে আল্লাহ্! আপনি কবুল করুন।") (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৫)

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٨٦ رُكُوْعَاتُهَا ٤٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

সূরাঃ বাকারাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২৮৬, রুকূ'ঃ ৪০)

আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

الٓمّٓ ①

১. আলিফ-লাম-মীম[১]

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ②

২. এটা ঐ গ্রন্থ যার মধ্যে কোনরূপ সন্দেহ নেই; আল্লাহ ভীরুদের (পরহেজগারদের) জন্যে এ গ্রন্থ হিদায়াত বা মুক্তিপথের দিশারী।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ③

৩. যারা অ-দৃষ্ট বিষয়গুলোতে বিশ্বাস স্থাপন করে, এবং নামায প্রতিষ্ঠিত করে ও আমি তাদেরকে যে জীবনো-পকরণ দান করেছি তা হতে ব্যয় করে থাকে।[২]

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ④

৪. এবং যারা তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয়েছে ও তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ করা হয়েছিল, তদ্বিষয়ে বিশ্বাস স্থাপন করে এবং পরকালের প্রতি যারা দৃঢ় বিশ্বাস রাখে।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑤

৫. এরাই তাদের প্রভুর পক্ষ হতে প্রাপ্ত হিদায়াতের উপর প্রতিষ্ঠিত রয়েছে এবং এরাই সফলকাম।

১। الم এই ধরণের অক্ষরগুলিকে হুরূফ-আল মুকাত্তা'আত (বিচ্ছিন্ন বর্ণমালা) বলা হয়। এগুলিকে পৃথক পৃথকভাবে পড়া হয়। কুরআন মজিদের বহু সূরার (উনত্রিশটি সূরার প্রথমে) প্রারম্ভে এরূপ হরফ বা অক্ষর ব্যবহৃত হয়েছে। এর অন্তর্নিহিত তাৎপর্য আল্লাহ্ই অবগত আছেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইসলামের ভিত্তি পাঁচটি স্তম্ভের উপর স্থাপিতঃ (১) এ সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্র রাসূল। (২) নামায কায়েম করা। (৩) যাকাত প্রদান করা। (৪) হজ্জ পালন করা। (৫) রমজান মাসে সিয়াম (রোজা) পালন করা। (বুখারী, হাদীস নং ৮)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑥

৬. নিশ্চয় যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের তুমি সতর্ক কর বা না কর, উভয়টা তাদের জন্য সমান, তারা বিশ্বাস স্থাপন করবে না।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۭ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۠ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑦

৭. আল্লাহ তাদের অন্তরসমূহের উপর ও তাদের কর্ণসমূহের উপর মোহরাংকিত করে দিয়েছেন এবং তাদের চক্ষুসমূহের উপর আবরণ পড়ে আছে এবং তাদের জন্য রয়েছে গুরুতর শাস্তি।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ⑧

৮. আর মানুষের মধ্যে এমন লোক আছে যারা বলে, আমরা আল্লাহর উপর এবং বিচার দিবসের উপর ঈমান এনেছি, অথচ তারা মোটেই ঈমানদার নয়।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ⑨

৯. তারা আল্লাহ ও মুমিনদের সঙ্গে প্রতারণা করে, প্রকৃত অর্থে তারা নিজেদের ব্যতীত আর কারও সঙ্গে প্রতারণা করে না, অথচ তারা এ সম্বন্ধে বোধই রাখে না।

فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ⑩

১০. তাদের অন্তরে ব্যাধি (রোগ) রয়েছে, উপরন্তু আল্লাহ তাদের ব্যাধি আরও বাড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে যেহেতু তারা মিথ্যা বলতো।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ⑪

১১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করো না তখন তারা বলে আমরা তো শুধু সংশোধনকারী।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ⑫

১২. সাবধান! তারাই অশান্তি সৃষ্টিকারী; কিন্তু তারা বুঝে না।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿٣﴾

৩. তিনি কাউকে জন্ম দেননি এবং তাঁকেও জন্ম দেয়া হয়নি,[১]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

৪. এবং কেও তাঁর সমকক্ষ নয়।

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ ফালাক, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿١﴾

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি ঊষার স্রষ্টার,

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿٢﴾

২. তিনি যা সৃষ্টি করেছেন তার অনিষ্ট হতে,

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ﴿٣﴾

৩. অনিষ্ট হতে অন্ধকার রাত্রির যখন তা আচ্ছন্ন হয়;

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ ﴿٤﴾

৪. এবং অনিষ্ট হতে গিরায় ফুঁকদান কারিণীর।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

৫. এবং হিংসুকের অনিষ্ট হতেও যখন সে হিংসা করে।

১। মু'আয ইবনে জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [তাকে] বললেন হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার কাছে আল্লাহ্‌র কি হক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার কাছে আল্লাহ্‌র হক হলো) সে তার ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তার সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি [নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক হলো আল্লাহ্ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩, ৭৩৭৪, ৭৩৭৫)

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ নাস, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٦ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ৬ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ ﴿١﴾

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি মানুষের প্রতিপালকের,[১]

مَلِكِ النَّاسِ ۙ ﴿٢﴾

২. যিনি মানবমন্ডলীর বাদশাহ।

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ ﴿٣﴾

৩. যিনি মানবমন্ডলীর প্রকৃত মা'বূদ।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ ﴿٤﴾

৪. আত্মগোপনকারী কুমন্ত্রণাদাতার অনিষ্ট হতে,[২]

الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ ﴿٥﴾

৫. যে লোকদের অন্তরে কুমন্ত্রনার উদ্রেক করে।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

৬. জ্বিনের মধ্য হতে অথবা মানুষের মধ্য হতে।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যখন বিছানায় আসতেন, তখন আপন দু'হাতের তালুতে 'কুলহুআল্লাহু আহাদ' এবং সূরা নাস ও সূরা ফালাক পড়ে দম করতেন। তারপর উভয় কব্জির তালু মুখের ওপর মুছে নিতেন আর দেহের যতটুকু হাত দু'খান পৌঁছতো ততটুকুতে হাত বুলিয়ে দিতেন। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেছেন, যখন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অসুস্থ হতেন, তখন আমাকে অনুরূপভাবে করতে হুকুম দিতেন। ইউনুস বলেছেন, ইবনে শিহাব যখন তাঁর বিছানায় যেতেন, তখন তাঁকে অনুরূপ করতে আমি দেখতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৪৮)

২। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, জাহান্নামকে কামনা-বাসনা দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। আর জান্নাতকে বিপদ-মূসীবত দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৭)